भटका देते हैं। अतएव कल्याण का अभिलाषी अर्जुन की परम्परा का अनुसरण करे।

अर्जुन उवाच।
अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।।४।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **अपरम्**=आधुनिक काल में हुआ है; **भवतः**=आपका; **जन्म**=आविर्भाव; **परम्**=अत्यन्त प्राचीन है; **जन्म**=जन्म; **विवस्वतः**=सूर्यदेव का; **कथम्**=किस प्रकार; **एतत्**=यह; **विजानीयाम्**=मैं जानूँ; **त्वम्**=आपने; **आदौ**=आदि में; **प्रोक्तवान्**=(इसका) प्रवचन किया; **इति**=ऐसा।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, सूर्यदेव विवस्वान् का जन्म आपसे अति पूर्व हुआ है, इसलिए मैं यह कैसे समझूँ कि पहले आपने ही सूर्य को इस योग का उपदेश किया था।।४।।

तात्पर्य

अर्जुन त्रिभुवन-विश्रुत भगवद्भक्त है; इसलिए यह क्योंकर सम्भव है कि वह श्रीकृष्ण की वाणी को स्वीकार न करे? वास्तव में अर्जुन अपने लिए नहीं, वरन् उनके निमित्त से जिज्ञासा कर रहा है, जो श्रीभगवान् में आस्थाहीन हैं अथवा आसुरभाव के कारण जिन्हें श्रीकृष्ण को भगवान् मानना प्रिय नहीं। उन्हीं के लिए अर्जुन इस सन्दर्भ में जिज्ञासा कर रहा है, मानो वह स्वयं ही भगवान् श्रीकृष्ण के तत्व को न जानता हो। दसवें अध्याय से स्पष्ट हो जायगा कि अर्जुन इस सत्य को भलीभाँति जानता था कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं, सम्पूर्ण कारणों के परम कारण एवं परब्रह्म की अवधि हैं। निस्सन्देह श्रीकृष्ण देवकीनन्दन के रूप में अवतीर्ण हुए थे, परन्तु अवतार लेने पर भी वे स्वयं भगवान् अजन्मा आदिपुरुष किस प्रकार बने रहे, साधारण मनुष्य के लिए यह रहस्य दुर्बोध्य है। अतएव इसके स्पष्टीकरण के लिए अर्जुन ने श्रीकृष्ण के समक्ष यह जिज्ञासा उपस्थित की, जिससे वे स्वयं इसका प्रामाणिक उत्तर दे सकें। सम्पूर्ण विश्व अनादिकाल से श्रीकृष्ण को परम-प्रमाण मानता आया है। चाहे असुरों को वे मान्य नहीं हैं, पर फिर भी उनकी प्रामाणिकता सर्वस्वीकृत है। अतः अर्जुन ने उन्हीं से यह जिज्ञासा की, जिससे श्रीकृष्ण स्वयं अपना वर्णन करें। ऐसा होने पर असुर उनका विकृत चित्रण नहीं कर सकेंगे, ऐसा उसका अभिप्राय है। श्रीकृष्ण-तत्त्व को आत्मसात् करना जीवमात्र का आवश्यक स्वार्थ है। अतः श्रीकृष्ण के लिए स्वयं अपने तत्त्व का निरूपण करना त्रिभुवन के लिए परम मंगलमय है। असुरों को श्रीकृष्ण का यह आत्म-वर्णन विचित्र प्रतीत हो सकता है क्योंकि वे श्रीकृष्ण को सदा अपने ही दृष्टिकोण से देखते हैं। दूसरी ओर भक्तवृन्द श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निस्यन्दित उन श्रीवचनों का उन्मुक्त हृदय से स्वागत करते हैं जिनमें वे स्वयं अपना वर्णन करें। श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में नित्य अधिकाधिक जानने के लिए उत्कण्ठित भक्तों के लिए श्रीकृष्ण के ये प्रमाणिक वचन नित्य आराध्य हैं। श्रीकृष्ण